ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

कला एवं संस्कृति

क्विक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

विषय सूची

1. भारतीय वास्तुकला 1

- सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला.....1
- मौर्य वास्तुकला.....1
- मौर्योत्तर वास्तुकला.....3
- स्तूप और लोक परंपराएँ.....5
- गुप्त वास्तुकला.....5
- इंडो-इस्लामिक वास्तुकला.....7
- आधुनिक वास्तुकला.....10

2. मंदिर वास्तुकला 12

- प्रारंभिक मंदिर.....12
- नागर (उत्तर भारतीय मंदिर शैली).....12
- द्रविड़ (दक्षिण भारतीय मंदिर शैली).....16
- वेसर और अन्य क्षेत्रीय शैलियाँ.....17

3. भारतीय मूर्तिकला 22

- सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ.....22
- मौर्यकालीन मूर्तियाँ.....23
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तियाँ.....23
- गुप्तकालीन मूर्तियाँ.....26
- मध्यकालीन मूर्तियाँ.....26

4. भारतीय चित्रकला 28

- प्रागैतिहासिक शैलचित्र.....28
- भित्ति चित्र.....29
- नायक चित्रकला.....31
- केरल भित्तिचित्र.....31
- लघु चित्रकारी.....31
- क्षेत्रीय शैलियाँ (17वीं-19वीं शताब्दी).....33
- पहाड़ी शैली.....35
- आधुनिक चित्रकला.....36
- लोक चित्रकला.....36

5. भारत में नृत्य शैलियाँ 39

- भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ.....39
- भरतनाट्यम (तमिलनाडु).....39
- कथकली (केरल).....40
- कथक (उत्तर प्रदेश).....41
- मणिपुरी शैली (मणिपुर).....42
- ओडिसी (ओडिशा).....42
- कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश).....43
- सत्रिया (असम).....44
- मोहिनीअट्टम (केरल).....44

6. भारतीय संगीत 47

- भारतीय संगीत का इतिहास.....47
- शास्त्रीय संगीत.....48
- हिंदुस्तानी संगीत.....48
- हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ.....48
- कर्नाटक संगीत.....49
- लोक संगीत.....51
- संगीत वाद्ययंत्र.....52

7. भारतीय धर्म एवं दर्शन 53

- हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदाय.....53
- शैव धर्म.....53
- भारतीय दर्शन के संप्रदाय.....54
- पारसी धर्म.....57
- ईसाई धर्म.....57
- यहूदी धर्म.....57
- इस्लाम.....57
- सिख धर्म.....58

8. भारतीय साहित्य एवं भाषा 59

- भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि.....59
- द्रविड़ साहित्य.....62
- भारतीय भाषाएँ एवं उनका प्रभाव.....64

9. भारत के प्रमुख नाट्यरूप और कठपुतली कला 69

- रंगमंच के रूप.....69
- लोक नाट्य (Folk Theatre).....70
- भारत की कठपुतली कला.....71

10. भारतीय हस्तशिल्प 74

- काँच से निर्मित वस्तुएँ 74
- कपड़े पर हस्तशिल्प 74
- हाथी दाँत शिल्प (Ivory Crafting) 75
- टेराकोटा शिल्प 75
- मिट्टी के बर्तनों की शिल्पकला 75
- धातु शिल्प 76
- चमड़े के उत्पाद 76
- काष्ठ कला 76
- विभिन्न प्रकार के खिलौने 77
- पत्थर की वस्तुएँ (Stoneware) 77
- कढ़ाई शिल्प (Embroidery Crafts) 77
- भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग 79
- फर्श के डिजाइन 79
- जीआई टैग (GI Tag) प्राप्त प्रमुख हथकरघा उत्पाद 80

11. विभिन्न कालों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 82

- खगोल विज्ञान (Astronomy) 82
- चिकित्सा 82
- धातुकर्म (Metallurgy) 83
- नौवहन (Navigation) 83
- जीव विज्ञान (Biology) 83
- रसायन विज्ञान (Chemistry) 83
- कृषि (Agriculture) 85

12. भारत में सांस्कृतिक संस्थान और महत्वपूर्ण पुरस्कार 86

- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण 86
- भारतीय शिल्प परिषद 86
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र 86
- ऑल इंडिया रेडियो 86
- सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र 86
- भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार 86
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद 86
- राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम 87
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद 87
- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (National Mission For Manuscripts) 87
- कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट 87
- साहित्य अकादमी 87
- संगीत नाटक अकादमी 88
- ललित कला अकादमी 88
- पुरस्कार एवं सम्मान 88

13. यूनेस्को की सूची में शामिल प्रमुख भारतीय विश्व धरोहर स्थल 91

- मूर्त विश्व धरोहर स्थल 91

14. विविध 97

- भारत में मार्शल आर्ट 97
- भारत के प्रमुख त्योहार और मेले 98
- प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय सिक्कों का एक अवलोकन 100
- मध्यकालीन सिक्के 101
- ब्रिटिश कालीन और आधुनिक सिक्के 102

15. परिशिष्ट 104

- नवीन संग्रहालय 104
- महत्त्वपूर्ण पुस्तकें एवं लेखक 104
- विदेशी यात्री और उनके अवलोकन/विवरण 105
- भारत में महत्त्वपूर्ण भक्ति आंदोलन 107
- भारत के महत्त्वपूर्ण सूफी संप्रदाय 108
- दिल्ली के सात शहर 109
- महत्त्वपूर्ण जी आई टैग्स (GI Tags) की सूची 109

1 भारतीय वास्तुकला

परिचय

वास्तुकला का तात्पर्य संरचनाओं को डिजाइन करने की कला और विज्ञान से है। भारतीय वास्तुकला की कहानी प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक स्वतंत्र भारत तक के क्रमिक विकास की कहानी है

सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला

भारतीय वास्तुकला के सबसे पुराने अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर में पाए गए हैं।

- इस सभ्यता के नगरों को एक आयताकार ग्रिड पैटर्न में बसाया गया था जिसमें सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- **मानकीकरण:** मानकीकृत आयामों में **पकी हुई मिट्टी के ईंटों का उपयोग किया और जिप्सम, मोर्टार का** उपयोग करके ईंटों की परतों को एक साथ जोड़ा।
- **आवासीय इमारतें:** घरों को आमतौर पर आँगन, सपाट छतों और कई कमरों के साथ बनाया जाता था। बड़े घरों में सामान्यतः निजी कुएँ और स्नानगृह होते थे। दरवाज़े और खिड़कियाँ शायद ही कभी मुख्य सड़कों पर खुलती थीं, जिससे गोपनीयता बनी रहती थी।
- **रक्षात्मक संरचनाएँ:** बाढ़ और आक्रमणों से बचाने के लिए शहरों में ईंटों से बनी किलेबंद दीवारें होती थीं।
- **उठा हुआ मंच:** ऊपरी और निचले दोनों शहर ऊँचे मंचों पर बने थे, लेकिन ऊपरी शहर के मंच की ऊँचाई अधिक थी।
- धौलावीरा एक विशिष्ट जगह है, क्योंकि इसे तीन भागों में विभाजित किया गया था और निर्माण में जली हुई ईंटों की बजाय पत्थरों का उपयोग किया गया था।
- **उन्नत जल निकासी प्रणाली:** शहर **उन्नत जल निकासी प्रणाली से सुसज्जित थे** जिसमें प्रत्येक घर की छोटी नालियाँ, एक बड़े नाले से जुड़ी हुई थीं।
  - नियमित सफाई और रखरखाव के लिए नालियों को अस्थाई तौर पर ढका गया था।
  - **नियमित अंतराल पर मलकुण्ड की** उपस्थिति के अलावा कुओं की उपस्थिति भी देखी गई।
- शहरों को दो प्रभागों में विभाजित किया गया था:

गढ़/ उच्च शहर	निचला शहर
• **पश्चिमी भाग** में स्थित • निचले शहर से **छोटा** • इसमें बड़ी-बड़ी इमारतें जैसे **अन्न भंडार, प्रशासनिक भवन, स्तंभ वाले हॉल, शासकों और अभिजात वर्ग के निवास, प्रांगण आदि शामिल थे।**	• **पूर्वी भाग** में अवस्थित • गढ़ से **बड़ा** • **एक कमरे वाले छोटे घर संभवतः कार्यशील वर्ग के लिए बनाए गए।**

मौर्य वास्तुकला

मौर्य वास्तुकला बौद्ध धर्म और **जैन धर्म से प्रभावित थी।** राज्य संरक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर इसे **दरबारी कला** और **लोक कला** में विभाजित किया गया है।

1. दरबारी कला

इसमें शासकों द्वारा बनवाए गए वास्तुशिल्प शामिल हैं। इसका उपयोग **राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।**

महल

- **कुम्रहार में अशोक का** महल एक तीन मंजिला विशाल लकड़ी की संरचना थी जिसमें एक ऊँचा केंद्रीय स्तंभ था।
- चंद्रगुप्त मौर्य का महल, **ईरान** में पर्सेपोलिस के **एकेमेनिड महलों (Achaemenid palaces)** से प्रभावित था। मेगस्थनीज के अनुसार यह महल मानव जाति की महानतम कृतियों में से एक था।

चित्र: सारनाथ स्तंभ

स्तंभ

अशोक के स्तंभ शिलालेख **राज्य के प्रतीक के रूप में और युद्ध विजय की स्मृति में बनवाए गए थे।**

- स्तंभ आमतौर पर **चुनार के बलुआ पत्थर से बने थे।**
- स्तंभ को **चार भागों** से वर्गीकृत किया गया है:
  - **यष्टि (Shaft):** यष्टि एक पत्थर के टुकड़े या मोनोलिथ **(एकाश्म)** से बना होता है जिससे स्तंभ के आधार का निर्माण होता है।
  - **शिखर (Capital):** शिखर यष्टि के ऊपर स्थित होता है। यह कमल या घंटी के आकार का हो सकता है। ईरानी स्तंभों से प्रभावित घंटी के आकार वाले ये स्तंभ, अपने विशेष चमक और विशिष्ट परिमार्जन के लिए जाने जाते हैं।
  - **अबेकस (Abacus):** शिखर (Capital) के शीर्ष पर, एक गोलाकार या आयताकार आधार होता है जिसे अबेकस के नाम से जाना जाता है। अबेकस पर जानवरों की आकृतियों को स्थापित किया जाता है।
  - **शिखर आकृतियाँ (Capital Figure):** ये आमतौर पर **बैल, शेर, हाथी जैसे जानवरों की आकृतियाँ होती हैं।**
- शिखर आकृतियों वाले कुछ मौजूदा स्तंभ **बिहार के बसरा-बखिरा, लौरिया नंदनगढ़** और **रामपुरवा (वृषभ)** में तथा **उत्तर प्रदेश** में **संकिसा** और **सारनाथ (अशोक स्तंभ) में पाए गए हैं।**

राष्ट्रीय प्रतीक

- सारनाथ स्तंभ का अबेकस और शीर्ष भाग का सिंह, देश के आधिकारिक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
- सारनाथ स्तंभ के **अबेकस** में **चार जानवर** चार दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं- **घोड़ा** (पश्चिम), **हाथी** (पूर्व), **वृषभ** (दक्षिण) और **शेर** (उत्तर)। अबेकस **में** चारों दिशाओं में **चौबीस तीलियों** वाले एक **चक्र** का चित्रण है।
- पशुओं की गति दाएँ से बाएँ होती है। राष्ट्रीय प्रतीक पर बैल को नीचे दाईं ओर तथा घोड़े को नीचे बाईं ओर देखा जा सकता है।
  - **हाथी, रानी मायादेवी के स्वप्न को** दर्शाता है, **वृषभ उस महीने की राशि (वृषभ) को** दर्शाता है जिसमें बुद्ध का जन्म हुआ था, **घोड़ा बुद्ध के घोड़े कंथक** का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका उपयोग उन्होंने राजसी जीवन से दूर जाने के लिए किया था और **सिंह, आत्मज्ञान की प्राप्ति को** दर्शाता है।
  - इस स्तंभ शिखर का निर्माण अशोक ने **धर्मचक्रप्रवर्तन** (बुद्ध द्वारा पहला उपदेश) की स्मृति में करवाया था।
  - चार **शेर के प्रतीक**, सभी दिशाओं में बुद्ध के धम्म को फैलाने के प्रतीक हैं।
- राष्ट्रीय प्रतीक में, **मुंडक उपनिषद** के शब्द **"सत्यमेव जयते"** जिसका अर्थ, **"सत्य की ही जीत होती है,"** अबेकस के नीचे **देवनागरी लिपि** में अंकित है।

अशोक और अकेमेनियन (हखामनी) स्तंभों के बीच अंतर

पहलू	अशोक स्तंभ	अकेमेनियन स्तंभ
अवधि	तीसरी शताब्दी ई.पू.	छठी-चौथी शताब्दी ई.पू.
उद्देश्य	अशोक के धम्म (नैतिक कानून) के संदेशों के विस्तार के लिए स्वतंत्र रूप से शिलालेखों के रूप में स्थापित।	बड़े महलनुमा या औपचारिक संरचनाओं, जैसे- दर्शक हॉल (अपादान) को सहारा देने आदि के लिए।
सामग्री	बलुआ पत्थर या अन्य स्थानीय पत्थर	चूना पत्थर, बलुआ पत्थर या अन्य स्थानीय पत्थर
संरचना	शिखर के साथ एकल अखंड यष्टि	ऊँचे, विस्तृत शिखर के साथ बाँसुरीदार यष्टि और एक साथ जोड़े गए कई पत्थर
धार्मिक प्रभाव	बौद्ध धर्म से संबद्ध	पारसी धर्म और फारसी संस्कृति से संबद्ध
शिखर (Capital)	शेर, हाथी और वृषभ की मूर्तियाँ	अधिकाशतः बड़े अक्षरों में जुड़वा बैलों के सिर, ग्रिफिन या अन्य पौराणिक जीव अंकित होते हैं।

स्तूप

स्तूप मूल रूप से शवाधान टीलों को कहा जाता है। स्तूप शवाधान टीले का पारंपरिक रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें मृतकों के अवशेष और राख रखी जाती है। बौद्ध-पूर्व होने के बावजूद, स्तूपों को बौद्धों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। [UPSC 2023]

स्तूप के संरक्षक

संरक्षकों में सामान्य लोगों से लेकर गहपति और राजा तक शामिल होते थे।

- कई स्थलों पर शिल्पीसंघों द्वारा दान का भी उल्लेख मिलता है। हालाँकि, बहुत कम शिलालेख हैं जिनमें कारीगरों के नामों का उल्लेख है, जैसे- पीतलखोरा (पश्चिमी घाट में सतमाला रेंज) में कान्हा और महाराष्ट्र में कोंडाने गुफाओं (लोनावाला के पास) में स्थित शिलालेख।
- शिलालेखों में कारीगरों की श्रेणियों जैसे पत्थर तराशने वाले, सुनार, पत्थर पॉलिश करने वाले, बढ़ई आदि का भी उल्लेख किया गया है।
- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से, संरक्षण का पैटर्न बहुत सामूहिक रहा है और शाही संरक्षण के बहुत कम उदाहरण देखने को मिलते हैं।

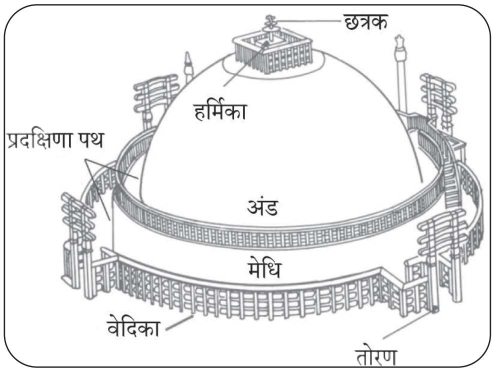

चित्र: स्तूप की संरचना

चित्र: साँची स्तूप

स्तूप की विशेषताएँ

बौद्ध स्तूप **एक ठोस संरचना वाला एक अर्द्ध-गोलाकार गुंबद है।**

- स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से बना हुआ है **जबकि बाहरी** सतह **पक्की ईंटों** से बनी हुई है।
- इसमें एक **बेलनाकार संरचना होती है** जिसके शीर्ष पर **हर्मिका** और **छतरी बनी होती है।**
- यह **प्रदक्षिणा पथ से घिरा होता है,** जहाँ भक्त परिक्रमा करते हैं।
- पूरी संरचना **लकड़ी की रेलिंग** और **तोरण नामक प्रवेश द्वारों से भी घिरी होती है।**
- बुद्ध के जीवन की घटनाओं, जैसे- जन्म, परित्याग, ज्ञानोदय, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण को कमल, हाथी, जातक कथाओं आदि प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

महत्त्वपूर्ण स्तूप

- **बुद्ध के अवशेषों** पर स्तूप का निर्माण:
    - बिहार में **राजगृह, वैशाली, वेथादीपा** और **पावा।**
    - नेपाल में **कपिलवस्तु, अल्लकप्पा** और **रामग्राम।**
    - उत्तर प्रदेश में **कुशीनगर** और **पिप्पलिवन।**
- **अवंती** और **गांधार** सहित कई स्थानों पर बुद्ध के अवशेषों पर कई अन्य स्तूपों के निर्माण का भी उल्लेख मिलता है, जो गंगा घाटी के बाहर हैं।
- **भरहुत, बोधगया, अमरावती** और **नागार्जुनकोंडा** अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल थे।

साँची का स्तूप

साँची स्तूप जो एक **विश्व धरोहर स्थल है, भोपाल** के पास रायसेन जिले में **बेतवा नदी** के पश्चिम में अवस्थित है। **[UPSC 2021]**

- अन्य अपेक्षाकृत छोटे स्तूपों के साथ, **साँची में तीन मुख्य स्तूप हैं।**
    - ऐसा माना जाता है कि **स्तूप-1 में बुद्ध के अवशेष हैं।**
    - **स्तूप-2** में तीन अलग-अलग पीढ़ियों से संबंधित दस कम प्रसिद्ध **अर्हतों (जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है) के अवशेष हैं।** उनके नाम अवशेष ताबूत पर पाए जाते हैं।
    - **स्तूप-3 में सारिपुत्त** और **महामौगलायन (बुद्ध** के दो प्रमुख शिष्य) के अवशेष हैं।
- मूल रूप से, स्तूप एक छोटी ईंट की संरचना थी जिसका समय के साथ विस्तार हुआ। बाद में, इसे पत्थर से ढक दिया गया और वेदिका तथा तोरण (प्रवेश द्वार) से घेर दिया गया।
- शिलालेख के साथ अशोक का सिंह-शीर्ष स्तंभ, स्तूप के दक्षिणी ओर पाया गया है।
- यहाँ **ऊपरी प्रदक्षिणा पथ भी है**,जो इस स्थल के लिए अद्वितीय है।
- चारों **प्रवेश द्वारों को** मूर्तियों द्वारा सजाया गया है। साँची की मूर्तियाँ, **आयाम में छोटी होने के बावजूद, बहुत प्राकृतिक** हैं।
- स्तंभों पर यक्षों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और **शालभंजिका** (पेड़ की शाखा पकड़े हुए महिला) की मूर्तियाँ अपने आकर्षक आकार के लिए उल्लेखनीय हैं।
- **अशोक के काल में** स्तूप कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची थी।

2. लोक कला

शाही समर्थन के अलावा, स्थानीय समर्थन के माध्यम से मूर्तिकला, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ और गुफा निर्माण सहित, कला के रूपों का विकास हुआ। इन्हें लोक कला के रूपों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

गुफा वास्तुकला

रॉक-कट गुफा वास्तुकला का विकास मौर्य काल के दौरान हुआ और आमतौर पर इन रॉक-कट गुफाओं का उपयोग **जैन** और **बौद्ध भिक्षुओं द्वारा विहार** (आवास स्थल) के रूप में किया जाता था।

- गुफाओं की मुख्य विशेषताओं में **अत्यधिक पॉलिशयुक्त आंतरिक भाग** और **सजावटी प्रवेश द्वार थे।**
- प्रारंभिक मौर्य गुफाओं का उपयोग आजीवक संप्रदायों द्वारा किया जाता था। बाद में, वे बौद्ध मठों के रूप में लोकप्रिय हो गईं।
- **बिहार** के **बराबर** और **नागार्जुनी गुफाओं का** निर्माण मौर्य काल के दौरान हुआ था।
    - मुख्य विशेषताओं में आयताकार और गोलाकार प्रवेश द्वार, चिकनी आंतरिक दीवारें और ध्यान हेतु न्यूनतम कक्ष शामिल हैं। लोमस ऋषि गुफा जैसी कुछ गुफाओं में मेहराब द्वार और सम्राट अशोक के शिलालेख हैं।
    - गुफाएँ ज्यामितीय नक्काशी और शिलालेखों के साथ प्राकृतिक परिवेश में रणनीतिक रूप से स्थित हैं, जो संप्रदाय की कठोर जीवन शैली और प्रकृति से जुड़ाव पर बल देती हैं।
    - बराबर पहाड़ियाँ चार गुफाओं के समूह को समाहित करती हैं, जिन्हें एक साथ 'बराबर गुफाएँ' कहा जाता है। इन्हें **'लोमस ऋषि'**, **'सुदामा'**, **'विश्वकर्मा'** और **'करण चौपड़'** गुफाओं के नाम से जाना जाता है।
    - **नागार्जुनी गुफाओं** में वादीथीका गुफा, वापियका गुफा और गोपिका गुफा शामिल हैं।

लोमस ऋषि गुफाएँ **[UPSC 2013]**

ये बिहार में गया के पास **बराबर पहाड़ियों पर चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ हैं।**

- ये गुफाएँ **अशोक ने आजीवक संप्रदाय** को दान में दी थीं।
- गुफा को प्रवेश द्वार पर **अर्द्ध-वृत्ताकार चैत्य मेहराब से सजाया गया है।**

- **नासिक की गुफाओं (महाराष्ट्र) को पांडव लेनी (लेणी) गुफाओं के** नाम से भी जाना जाता है। **[UPSC 2021]**

मूर्तियाँ

इसका उपयोग मुख्य रूप से स्तूपों में तोरण, मेधी की सजावट और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।

- **मौर्यकाल की मूर्तियाँ जैन, हिंदू और बौद्ध तीनों धर्मों से संबंधित हैं।**
- ये अपनी यथार्थवादी, प्राकृतिक शैली, चिकनी सतह और पॉलिश पत्थर के लिए प्रसिद्ध हैं। मुख्य प्रतिमाओं में पशु प्रतीकरवाद (जैसे- शेर और हाथी), धर्मचक्र जैसी प्रारंभिक बौद्ध प्रतिमाएँ और दीदारगंज यक्षिणी (उर्वरता और प्रचुरता का प्रतीक एक विस्तृत और सुंदर महिला आकृति) शामिल हैं। उल्लेखनीय उदाहरणों में सारनाथ का सिंह स्तंभ और रामपुरवा स्तंभ शामिल हैं।

मृदभांड के बर्तन

- मौर्य काल के मिट्टी के बर्तनों को **उत्तरी काले परिमार्जित (पॉलिश्ड) मृदभांड (NBPW) के रूप में जाना जाता है।**
- उनकी विशेषता यह थी कि वे काले रंग के **अत्यधिक चमकदार मृदभांड थे** और उन्हें **मिट्टी के बर्तनों में विशिष्ट श्रेणी के बर्तन माना जाता है।**

मौर्योत्तर वास्तुकला

उस काल की कला बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित करती है जिसे उत्तर में **शुंगों, कण्वों, कुषाणों और शकों** तथा दक्षिणी और पश्चिमी भारत में **सातवाहनों, इक्ष्वाकुओं, आभीरों और वाकाटकों द्वारा आगे बढ़ाया गया था।**

रॉक-कट गुफाएँ

इस अवधि में दो प्रकार की गुफाओं का विकास हुआ:

- चैत्य और
- विहार **[UPSC 2013]**

गुफाओं को आमतौर पर मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था। उनमें **आँगन** और **पत्थर की** दीवारें भी थीं।

चैत्य	विहार
• **चैत्य को प्रार्थना कक्ष** के रूप में उपयोग किया जाता था। • इनमें एक छोटा आयताकार द्वार होता था, जो एक मेहराबदार हॉल में खुलता था।	• विहार वस्तुतः बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए **आवासीय स्थल होते थे।** • इनमें एक मुख्य गृह, सभागृह और भोजन कक्ष होता था। • चट्टानों की गहराई में बने कक्ष ध्यान के लिए होते थे।

पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा

यहाँ ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक की कई बौद्ध गुफाएँ पाई गई हैं।

- पश्चिमी भारत में मुख्यतः वास्तुशिल्प के तीन प्रकार थे:
  - **मेहराबदार गुंबदनुमा छत चैत्य हॉल** (अजंता, पीतलखोरा, भाजा में)।
  - **मेहराबदार गुंबदनुमा छत स्तंभरहित हॉल** (महाराष्ट्र के **थाना-नादसूर में**)।
  - **सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल:** पीछे की ओर एक गोलाकार कक्ष के साथ **सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल** (महाराष्ट्र में **कोंडिवाइट में**)।
- चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं के महत्त्वपूर्ण स्थल: **नासिक में विहार गुफाएँ, जुन्नार (महाराष्ट्र) में गणेशलेणी** और **मुंबई में कन्हेरी गुफाएँ।**

चित्र: अधूरी चैत्य गुफा, कन्हेरी

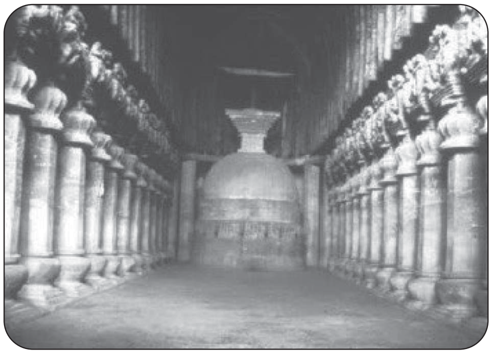

चित्र: चैत्य हॉल, कार्ले

चित्र: नासिक गुफा संख्या 3

- **कार्ले में,सबसे बड़े रॉक-कट चैत्य गृह की** खुदाई की गई थी। इस गुफा को मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था।
- कुछ महत्त्वपूर्ण **विहार गुफाएँ अजंता** गुफाएँ, **बेडसा** गुफाएँ और **नासिक** गुफाएँ हैं।
- **नासिक** में विहार **गुफाओं की** खुदाई में सामने के स्तंभों पर **घाट-आधार** और **घाट-शीर्ष** पर **मानव आकृतियाँ उकेरी गई थीं।**
- **अन्य गुफा स्थल:** पुणे के पास भाजा गुफाओं में बौद्ध गुफाएँ हैं, मुंबई में **कन्हेरी।** **[UPSC 2023]**
- **जुन्नार सबसे बड़ा गुफा उत्खनन स्थल है।**
  - **जुन्नार में** विहार गुफा की भी खुदाई की गई थी जिसे **गणेशलेणी** के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसमें बाद के काल की गणेश की एक छवि स्थापित की गई थी।

पूर्वी भारत में गुफा परंपरा

बौद्ध गुफाओं की खुदाई मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों में की गई है।

गुंटापल्ले गुफा (आंध्र प्रदेश)

गुफाओं की खुदाई **दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में की गई थी।** पश्चिमी भारत की गुफाओं की तुलना में यह गुफा **अपेक्षाकृत छोटी है।** यह उन प्रमुख स्थलों में से एक है, जहाँ एक ही स्थान पर **संरचित स्तूप, विहार** और **गुफाओं की खुदाई की गई है।** इसमें गोलाकार चैत्य गुफा और आयताकार विहार गुफाएँ हैं।

आंध्र में अन्य गुफा स्थल: रामपेरामपल्लम, अनकापल्ली और **धान्यकटक।**

- **विशाखापत्तनम** में **अनकापल्ली**: चौथी-पाँचवीं शताब्दी के दौरान पहाड़ी को काटकर एक विशाल चट्टानी स्तूप बनाया गया था। यह एक अद्वितीय स्थल है, क्योंकि यहाँ देश में **चट्टानों को काटकर बनाए गए सबसे बड़े स्तूप हैं।**
- **धान्यकटक (आंध्र प्रदेश):** महासांघिकों के अधीन प्रमुख बौद्ध केंद्र। **[UPSC 2023]**

उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ (ओडिशा)

इन गुफाओं में, **खारवेल जैन राजाओं के शिलालेख हैं।** शिलालेखों के अनुसार गुफाएँ **जैन भिक्षुओं के लिए थीं।**

चित्र: उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ

- इस गुफा में **विशाल** आकृतियाँ पाई जाती **हैं**। इस परिसर में कुछ गुफाओं की खुदाई, 8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी में की गई थी।
- यहाँ अनेक **एकल-कक्ष खुदे हुए हैं**।

स्तूप

- मौर्योत्तर काल में स्तूप आकार में **बड़े** और **अधिक सजावटी हो गए।**
- लकड़ी और ईंट के स्थान पर **पत्थर का प्रयोग तेजी से होने लगा।**
- शुंग **राजवंश ने तोरण का विचार प्रस्तुत किया।**
- तोरणों पर आकृतियाँ और पैटर्न उकेरे गए थे। ये हेलेनिस्टिक प्रभाव के प्रमाण थे। **उदाहरण:** मध्य प्रदेश में **भरहुत स्तूप** और **साँची स्तूप।**

स्तूप और लोक परंपराएँ

1. लोक देवता

- प्राचीन बौद्ध स्तूपों में यक्ष और यक्षिणी (प्रकृति की आत्माएँ) जैसे लोक देवताओं के चित्रण हैं, जिनमें साँची स्तूप में प्रसिद्ध शालभंजिका यक्षिणी उर्वरता का प्रतीक है।
- जल और उर्वरता का प्रतिनिधित्व करने वाले नाग देवता अमरावती और नागार्जुनकोंडा में दिखाई देते हैं, जबकि द्वारपाल (संरक्षक देवता) स्तूप के प्रवेश द्वारों पर पाए जाते हैं, जैसे- भरहुत में।
- सूर्य और चंद्र जैसे दिव्य देवता भी शामिल हैं, जो ब्रह्मांडीय सद्भाव को दर्शाते हैं। मातृका जैसी उर्वरता आकृतियाँ, विशेष रूप से साँची और भरहुत जैसे स्थलों पर सहायक भूमिकाओं में दिखाई देती हैं, जो बौद्ध शिक्षाओं को स्थानीय कृषि परंपराओं से जोड़ती हैं।
- कई स्तूपों में बोधिवृक्ष या लोक देवताओं से जुड़े पवित्र वृक्षों की नक्काशी है। वृक्षों को स्थानीय देवताओं के निवास के रूप में पूजा जाता था, जो बौद्ध और स्थानीय आध्यात्मिक प्रथाओं को जोड़ते हैं।

2. दैनिक जीवन

- जटिल नक्काशीदार तोरण (द्वार) जातक कथाओं और दैनिक जीवन, जैसे- शिकार, नृत्य और कृषि के दृश्यों को दर्शाते हैं।
- अमरावती स्तूप (आंध्र प्रदेश, भारत), जो व्यापार, यात्रा और धार्मिक प्रथाओं को दर्शाने वाली अपनी विस्तृत कथात्मक मूर्तियों के लिए जाना जाता है। पट्टिका (पैनल) मानव और प्रकृति के बीच संबंधों को दर्शाती है, सद्भाव और सादगी पर बल देती है।

गुप्त वास्तुकला

गुप्त साम्राज्य को **"प्राचीन भारत का स्वर्ण युग" कहा जाता है।** प्रारंभिक गुप्त शासकों ने **बौद्ध वास्तुकला को प्रोत्साहित किया,** लेकिन बाद में उनके द्वारा **मंदिर वास्तुकला को** प्रोत्साहित किया गया।

गुफाएँ

गुप्त काल के दौरान, गुफाओं की दीवारों पर **भित्तिचित्र एक प्रमुख विशेषता है।**

अजंता गुफाएँ: [UPSC 2016, 2021]

अजंता की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं की एक शृंखला हैं, जो घोड़े की नाल के आकार में व्यवस्थित हैं। ये महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के वाघोरा नदी के किनारे सह्याद्रि पहाड़ियों में स्थित हैं।

- इसमें **29 गुफाएँ हैं जिनमें से 25 विहार** और **4 चैत्य** के रूप में प्रयोग किए जाते थे।
- **ये वाकाटक राजाओं** के **संरक्षण** में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उत्कीर्ण की गई थीं; इन राजाओं में **हरिसेन** प्रमुख थे।
- **अजंता की गुफाओं में गर्भ-गृह में स्थित बुद्ध की मूर्ति अपने** परंपरागत रूप में है। भारीपन मूर्तियों का सामान्य लक्षण है। बच्चों के साथ **यक्षी** और **हरीति** की मूर्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। लोकप्रिय बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को चित्रों और मूर्तियों में दर्शाया गया है।
- **इन गुफाओं में गुफा संख्या 26 सबसे बड़ी है** और इसमें विभिन्न प्रकार की बुद्ध प्रतिमाएँ उकेरी गई हैं जिनमें सबसे बड़ी महापरिनिर्वाण प्रतिमा है।

अजंता गुफाओं में चार चैत्य गुफाएँ हैं, जो **प्रारंभिक चरण** (**दूसरी** और **पहली** शताब्दी ईसा पूर्व) (गुफा संख्या 10 और 9) और बाद के चरण पाँचवीं शताब्दी ईस्वी (गुफा संख्या 19 और 26) से संबंधित हैं। इसमें बड़े **चैत्यविहार हैं** और इसे **मूर्तियों** और **चित्रों से सजाया गया है**। अजंता **पहली शताब्दी ईसा पूर्व** और **पाँचवीं शताब्दी ईस्वी** की **चित्रकला** का एकमात्र उदाहरण है।

एलोरा की गुफाएँ

यह अजंता से 100 किमी. दूर **औरंगाबाद जिले में स्थित है।** इसकी खुदाई **चरणनंद्री पहाड़ियों में** चट्टानों से की गई है।

- यह **34 गुफाओं का एक समूह है**-17 **ब्राह्मण,** 12 **बौद्ध** और 5 **जैन धर्म से संबंधित है।** [UPSC 2013]
- इन गुफाओं का विकास **5वीं** और **11वीं शताब्दी के मध्य हुआ था** (अजंता की गुफाओं की तुलना में ये नई हैं)।
- इनमें विषयवस्तु और **स्थापत्य शैली की दृष्टि से विविधता है।**
- इनके स्तंभ विशाल हैं। अजंता में भी **दो मंजिला गुफाओं की खुदाई की गई है,** लेकिन एलोरा में **तीन मंजिल वाली गुफाएँ** एक अनूठी उपलब्धि है।

बौद्ध गुफाएँ

- इन गुफाओं में बुद्ध की प्रतिमाएँ आकार में बड़ी हैं; वे आमतौर पर **पद्मपाणि** और **वज्रपाणि** की छवियों द्वारा संरक्षित होती हैं।
- बौद्ध गुफाओं में वज्रयान बौद्ध धर्म से संबंधित कई छवियाँ हैं, जैसे- **तारा, महामायुरी, अक्षोब्या, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि।**
- केंद्रीय आकृति बुद्ध की है, जो तीन दिव्य मुद्राओं में पाई जाती है: ध्यान करना **(ध्यान मुद्रा)**, उपदेश देना **(व्याख्यान मुद्रा)** और दाहिने हाथ की तर्जनी से पृथ्वी को छूना **(भूमि-स्पर्श मुद्रा)।**
- बौद्ध गुफाओं में **तारा, खादिरवानी-तारा, चुंडा, वज्रदत-विश्वारी, महा-मयूरी, सुजाता, पंडारा** और **भृकुटी की नक्काशीदार छवियों** के माध्यम से **देवी का प्रतिनिधित्व किया गया था।**

जैन गुफाएँ

जैन गुफाओं के अंतर्गत यक्ष-मतंग, महावीर, पार्श्वनाथ और गोमतेश्वर की मूर्तियाँ प्रमुख हैं।

वैदिक धर्म की गुफाएँ

- इन समूहों की सबसे प्रारंभिक गुफाएँ छोटी और सरल हैं। कैलाशनाथ गुफा **(गुफा-16) को छोड़कर अधिकतर** गुफाएँ **चौकोर आकार की हैं।**

कैलाशनाथ मंदिर (गुफा-16)

चित्र: कैलाशनाथ मंदिर (गुफा सं. 16)

- यह एक **अखंड संरचना है, जो एक ही ठोस चट्टान** से बनाई गई है। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर भगवान शिव के निवास स्थान कैलाश का प्रतिनिधित्व करता है।
- इस मंदिर का निर्माण **राष्ट्रकूट राजवंश** के **कृष्ण प्रथम (756-773 ई.) द्वारा करवाया गया था।**
- यह मंदिर **दो मंजिला है** और **पहली मंजिल पर कैलाश मंदिर है।**
- निचली **मंजिल पर आदमकद हाथियों की** नक्काशी उत्कीर्ण की गई है। देखने में ऐसा लगता है मानो हाथियों ने मंदिर को अपनी पीठ पर उठा रखा है।
- मंदिर के बाहरी हिस्से में **शैव और वैष्णव** देवताओं की छवियाँ हैं।
- प्रांगण में **ध्वजदंड** और एक **नंदी मंडप के साथ दो विशाल स्तंभ हैं।**
- **शिव-पार्वती का विवाह समारोह, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाने का** प्रयास और **देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर का विनाश,** सुंदर मूर्तियाँ हैं।
- एक आकर्षक मूर्ति मगरमच्छ पर सवार **नदी देवी गंगा की** और कछुए पर सवार नदी देवी यमुना की है।
- शैव विषयों में, **रावण द्वारा कैलाश पर्वत को हिलाना, अंधकासुरवध** और **कल्याणसुंदर को** प्रचुरता से चित्रित किया गया है जबकि वैष्णव विषयों में विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाया गया है।

एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ

गुफा नं	विशेषताएँ
10	विश्वकर्मा गुफा या **बढ़ई की गुफा।** इस गुफा में महात्मा बुद्ध **धर्मचक्र मुद्रा में बैठे हैं** और उनके पीछे बोधि वृक्ष बना हुआ है।
12	एक हृष्ट-पुष्ट महिला को कोबरा का कमरबंद और सिर पर टोपी पहने हुए दर्शाया गया है। खदरीवानी-तारा ने भी उसी गुफा में अपने एक हाथ में एक कोबरा पकड़ रखा है।
गुफा 14-रावण की खाई गुफा 15-दशावतार मंदिर	
गुफा 29-धूमर लेना गुफा 30-छोटा कैलाश (जैन गुफा) गुफा 32-इंद्र सभा (जैन गुफा) गुफा 33-जगन्नाथ सभा (जैन गुफा)	

एलीफेंटा की गुफाएँ (5वीं शताब्दी के मध्य से 6वीं शताब्दी)

यह **मुंबई** के पास एलीफेंटा द्वीप (जिसे घारापुरी द्वीप के रूप में भी जाना जाता है) पर स्थित है। यह **मूल रूप से एक बौद्ध स्थल था जिस पर** बाद में **शैव धर्म का प्रभुत्व स्थापित हो गया।** यह एलोरा के समकालीन है और अपनी **मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।** यह एक **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।**

चित्र: महेशमूर्ति

- इसमें **पाँच हिंदू गुफाएँ** और **एक जोड़ी बौद्ध गुफाएँ स्थित हैं।**
- सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा **महेशमूर्ति** गुफा है।

बाघ की गुफाएँ

यह मध्य प्रदेश के धार जिले में **बाघनी नदी** के तट पर स्थित है और **नौ बौद्ध गुफाओं का एक समूह है।** इसका विकास लगभग 5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी में मुख्यतः **सातवाहन काल के दौरान** हुआ था। सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा, **रंग महल** है।

जूनागढ़ की गुफाएँ (गुजरात)

इसकी अनूठी विशेषता प्रार्थना कक्ष के सामने 30-50 फीट ऊँचे गढ़ का होना है जिसे **'ऊपर कोट' के नाम से जाना जाता है।**

मंडपेश्वर गुफाएँ (मुंबई के पास बोरिवल्ली)

मंडपेश्वर गुफाओं (मुंबई के पास बोरिवल्ली) को मोंटपेरिर गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। ये गुफाएँ गुप्त काल के अंत में ब्राह्मण गुफाओं के रूप में विकसित हुई थीं और बाद में इसे एक ईसाई गुफा में बदल दिया गया।

उदयगिरि की गुफाएँ (ओडिशा की उदयगिरि-खंडगिरि गुफाओं से भिन्न)

ये गुफाएँ विदिशा, मध्य प्रदेश में स्थित हैं और इन्हें 5वीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में **चंद्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण में बनाया गया था।**

- **मूर्तियाँ: विष्णु का वराह या सूअर अवतार।** [UPSC 2014, 2015]

स्तूप

स्तूप स्थल-समत (उत्तर प्रदेश), **रत्नागिरी** (ओडिशा) और **मीरपुर खास** (सिंध) **धमेख स्तूप** (वाराणसी के निकट) का विकास इसी काल में हुआ था।

देवनी मोरी गंगा घाटी के बाहर एक महत्त्वपूर्ण स्तूप स्थल है। यह स्थल अस्पष्ट रूप से तीसरी शताब्दी या चौथी शताब्दी का प्रतीत है।

टेराकोटा और मृदभांड

मिट्टी की मूर्तियों का उपयोग धार्मिक और मृदभांड, दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था। गुप्त काल के मृदभांडों के अवशेष अहिच्छत्र , राजगढ़, हस्तिनापुर और बशर में पाए गए हैं। इस काल के मृदभांडों का सबसे विशिष्ट वर्ग "लाल मृद्भांड" है।

मंदिर वास्तुकला

गुप्त काल के दौरान, प्रारंभिक चरण में सपाट छत वाले अखंड मंदिरों से लेकर बाद के वर्षों में मूर्तियों से युक्त शिखर वाले मंदिरों की क्रमिक प्रगति हुई। प्रगति को **5 चरणों में विभाजित किया जा सकता है**:

- **प्रथम चरण:** मंदिर **चपटी छत** वाले **चौकोर आकार के थे।** पूरी संरचना एक कम ऊँचाई वाले चबूतरे/मंच पर बनाई गई थी।
- **द्वितीय चरण:** मंच ऊँचे या ऊपर उठाए गए थे। **दो मंजिला मंदिर** पाए गए हैं। एक महत्त्वपूर्ण विकास गर्भगृह के चारों ओर एक ढका हुआ चलने योग्य मार्ग था जिसे **प्रदक्षिणापथ कहा जाता था**, जैसे-**नचनाकुठारा** में **पार्वती मंदिर** (मध्य प्रदेश)।
- **तृतीय चरण: तृतीय चरण में** समतल छत के स्थान पर **शिखरों** का उद्भव हुआ। मंदिरों की **पंचायतन शैली की शुरुआत की गई।**
- **चतुर्थ चरण: सामान्यत:** तीसरे चरण के समान ही था, सिवाय इसके कि **मुख्य मंदिर अब अधिक आयताकार हो गया,** जैसे- महाराष्ट्र में टेर मंदिर।
- **पंचम चरण:** उथले आयताकार प्रक्षेपण वाले **वृत्ताकार मंदिर का निर्माण।** जैसे- राजगीर में मनियार मठ।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की शुरुआत 12वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में भारत पर **मुहम्मद गौरी के कब्जे के साथ हुई।**

- मुसलमानों ने **सासैनियन** और **बीजान्टिन साम्राज्यों की विभिन्न डिजाइनों को**, जो उन्हें विरासत में मिली थीं, स्थानीय संस्कृति के साथ जोड़ दिया, जिससे **इंडो-सारसेनिक** या **इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की उत्पत्ति हुई।**
- उन्होंने नए तत्त्वों जैसे **सुलेख, जड़ाउ कार्य का उपयोग करके अलंकरण, शहतीर, ब्रैकेट, गुंबद** आदि की शुरुआत की।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ:

- **धनुषाकार शैली** (Arcuate Style) **ने** वास्तुकला की पारंपरिक **ट्रैबीट शैली** (Trabeate Style) **का स्थान ले लिया।**
- मस्जिदों के आस-पास **मीनारों का निर्माण** शुरू किया गया।
- **मोर्टार का** उपयोग जोड़ने की सामग्री के रूप में किया गया।
- मुसलमानों को किसी भी सतह पर जीवित आकृतियों को उकेरने की मनाही थी। उन्होंने अपनी धार्मिक कला और वास्तुकला विकसित की जिसमें अरबी कला (अरबस्क शैली), **ज्यामितीय पैटर्न** तथा प्लास्टर और पत्थर पर **सुलेख शामिल थे।**
  - **अरबस्क:** एक सजावटी डिजाइन जिसमें रेखाएँ, पत्तियाँ और फूल आपस में गुंथे होते हैं।
- इमारतों में उत्कृष्ट **जाली का कार्य किया गया था,** जो इस्लामी क्षेत्र में **प्रकाश के महत्त्व को दर्शाता है।**
- आँगन में उपस्थित तालाबों, फव्वारों और छोटी नालियों के माध्यम से **जल के उपयोग को** महत्त्व मिला।
  - जल का उपयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिए किया जाता था, अर्थात् **धार्मिक, सजावटी** और **परिसर को ठंडा रखने के लिए।**
- **बगीचे की** 'चारबाग शैली' की शुरुआत की गई जिसमें एक वर्गाकार ब्लॉक को चार समान उद्यानों में विभाजित किया गया था।

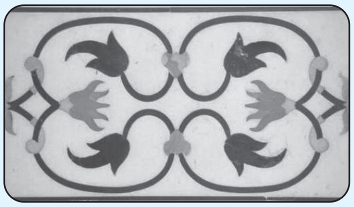

चित्र: चारबाग शैली

- **पितरा-ड्यूरा तकनीक अर्द्ध-कीमती पत्थरों का** उपयोग कर किए गए **सचित्र मोजेक कार्य** को संदर्भित करती है।
- **टाइलिंग (Tessellation):** दीवारों और फर्शों को टाइल से सजाने की एक तकनीक।
- **अग्रसंक्षेपण (Foreshortening) तकनीक,** जो शिलालेखों को वास्तव में जितना करीब है उससे अधिक करीब दिखाती है।

धनुषाकार शैली और ट्रैबीट शैली के बीच अंतर

धनुषाकार शैली	ट्रैबीट शैली
• **मेहराबों** एवं **गुंबदों** का प्रयोग। • **मेहराबों का निर्माण वूसोइर (इंटर लॉकिंग ब्लॉकों की श्रृंखला) के साथ किया जाना आवश्यक था जिसमें कीस्टोन लगे हुए थे।** • मस्जिदों के शीर्ष पर अर्द्ध-गोलाकार **गुंबदों** का प्रयोग। • मस्जिदों के चारों कोनों पर मीनारें मौजूद थीं। • निर्माण के लिए चूने के प्लास्टर, ईंट और मोर्टार का उपयोग किया गया था।	• **ब्रैकेट, स्तंभ लिंटल्स** का उपयोग। • मंदिरों के शीर्ष पर **शंक्वाकार** या **वक्ररेखीय शिखर** का प्रयोग। • मीनारें अनुपस्थित होती हैं। • पत्थर सभी निर्माणों का प्राथमिक घटक था।

शैलियों की श्रेणियाँ

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के अध्ययन को पारंपरिक रूप से वर्गीकृत किया गया है:

- शाही शैली (दिल्ली सल्तनत)
- प्रांतीय शैली (मांडू, गुजरात, बंगाल और जौनपुर)
- मुगल शैली (दिल्ली, आगरा और लाहौर)
- दक्कनी शैली (बीजापुर, गोलकुंडा)

1. शाही शैली

यह सल्तनत काल के दौरान शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों के तहत फला-फूला और प्रत्येक शासक ने अपनी कुछ विशेषताएँ प्रदान कीं।

गुलाम राजवंश

- इस काल की वास्तुकला की शैली को **वास्तुकला की मामलुक शैली** के रूप में जाना जाता है।
- इस अवधि के दौरान अधिकांश निर्माण **मौजूदा धार्मिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण थे।**
- **बलबन की कब्र को** पहले **वास्तविक मेहराब** से सजाया गया था।
- **कुतुब मीनार, दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद**, अजमेर में **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** आदि इस काल की अन्य संरचनाएँ थीं।

कुतुब मीनार

इसे पाँच मंजिला इमारतों में विभाजित किया गया है जिसके निर्माण की शुरुआत कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा शुरू की गई और बाद में इल्तुतमिश और फिरोज शाह तुगलक द्वारा इसे पूरा किया गया। संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में इसका निर्माण किया गया था।

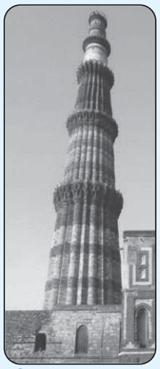

चित्र: कुतुब मीनार

- फिरोज शाह तुगलक (1351-88 ई.) ने इसकी दो मंजिलों का पुनर्निर्माण कराया।
- यह भारत की सबसे ऊँची पत्थर की मीनार है।
- मीनार **बहुभुज** और **गोलाकार** आकृतियों का मिश्रण है।
- यह मुख्य रूप से **लाल** और **भूरे बलुआ पत्थर से बनी है और** ऊपरी मंजिलों में कुछ हद तक **संगमरमर का उपयोग किया गया है।**
- इसकी विशेषता अत्यधिक **सजी हुई बालकनियाँ** और पत्तों वाले डिजाइनों से जुड़े **शिलालेखों की पट्टियाँ हैं।**

मीनारों का उपयोग प्रतिदिन अजान या नमाज के बुलावा हेतु होता था। अधिक ऊँचाई शासक की ताकत और शक्ति का प्रतीक थी।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद: कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ईस्वी के आस-पास इस मस्जिद का निर्माण कराया था।

खिलजी वंश

उन्होंने 1290 ई. से 1320 ई. तक शासन किया और **वास्तुकला की सेल्जुक शैली की स्थापना की।**

- मोर्टार का उपयोग पत्थरों को जोड़ने के लिए प्रमुखता से किया जाने लगा।
- खिलजी वास्तुकला की विशेषता **लाल बलुआ पत्थर का उपयोग और** संगमरमर से उभरी धनुषाकार शैली, गुंबद के नीचे धँसी हुई मेहराबें, छिद्रित खिड़कियाँ, एक बड़ा गुंबद और एक नुकीले घोड़े की नाल के आकार में एक वास्तविक मेहराब है।
- उदाहरण: **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा अलाई दरवाजा, सीरी किला आदि।**

अलाई दरवाजा: इसे अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में बनवाया था और यह **पहले वास्तविक गुंबद से सुशोभित है।**

तुगलक वंश

- भवन की **मजबूती पर अधिक** तथा **साज-सज्जा पर कम जोर दिया गया।** इसने निर्माण की एक शैली पेश की जिसे **'बैटर' के नाम से जाना जाता है।** इसे अधिक मजबूती देने के लिए **ढलान वाली दीवारों का उपयोग किया गया, जो इसकी विशेषता थी** जैसा कि गियासुद्दीन तुगलक के मकबरे में देखा गया है।
- उनकी **विशेषताओं में** प्रमुख निर्माण सामग्री के रूप में **पत्थर** के मलबे का उपयोग,**चार केंद्रित मेहराब का प्रयोगात्मक उपयोग** (मेहराब-बीम संयोजन तुगलक शैली की एक पहचान है), शामिल हैं। कब्रों में एक **नुकीले गुंबद और अष्टकोणीय योजना का उद्भव,** इमारतों के पैनलों में **सजावट के** एक तत्त्व के रूप में **मटमैली टाइलों की शुरूआत।**
- **तुगलकाबाद, जहाँपनाह** और **फिरोजाबाद** शहर तुगलक काल के निर्माण के उदाहरण हैं।
- **लोदी राजवंश:** दिल्ली और उसके आस-पास **बिना** किसी **भव्य सजावट के** बड़ी संख्या में कब्रें बनाई गईं। इन मकबरों को **अष्टकोणीय योजना पर डिजाइन किया गया था।**
- **दोहरे गुंबदों की** शुरुआत की गई जिसमें **शीर्ष गुंबद के अंदर एक खोखला गुंबद शामिल था।**
- **सिकंदर लोदी का मकबरा (दिल्ली)** भारत में निर्मित **पहला उद्यान मकबरा** था।

सल्तनत काल की सार्वजनिक इमारतें इसमें सराय, पुल, बावली, बाँध, कचेहरी (प्रशासनिक भवन), कोतवाली (पुलिस स्टेशन), डाक-चौकी (पोस्ट-स्टेशन), हम्माम (सार्वजनिक स्नानघर) और कटरा (बाजार स्थान) शामिल हैं।

सराय: इसे 13वीं शताब्दी में **तुर्कों** द्वारा भारत में **लाया गया था।** सराय के अस्तित्व का सबसे पहला उल्लेख **बलबन के समय** (1266) में मिलता है।

- मुहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक को दिल्ली के साथ-साथ सल्तनत के प्रमुख भूमि मार्गों पर बड़ी संख्या में सरायों का निर्माण करने के लिए जाना जाता है।

कुएँ और बावड़ियाँ दिल्ली सल्तनत वास्तुकला का एक हिस्सा थे। **गंधक की बावली** महरौली (दिल्ली) में **इल्तुतमिश** द्वारा निर्मित बावड़ियों में से एक है।

2. प्रांतीय शैली

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में बंगाल, गुजरात, जौनपुर, गोलकुंडा, मालवा और दक्कन के तात्कालिक राज्यों की स्थानीय वास्तुकला शैलियों को शामिल किया गया, जिससे प्रांतीय शैली को बढ़ावा मिला। इनमें से कुछ प्रांतीय विशेषताएँ थीं:

बंगाल: बाँस के निर्माण से उत्पन्न हुई ढलानदार कंगनी वाली बंगाल की छत को **मुसलमानों द्वारा** अपनाया गया।

- **ईंट मुख्य निर्माण सामग्री** थी और **पत्थर का उपयोग मुख्यत: स्तंभों** तक ही सीमित था।
- **सजावट के लिए ढकी हुई ईंटों** और **चमकदार टाइलों का उपयोग किया** जाता था।
- **उदाहरण**- गौर में **कदम रसूल मस्जिद** और **दखिल दरवाजा,** पांडुआ में **अदीना मस्जिद**, बंगाल में दर्सबारी मस्जिद और अहमदाबाद में सीदी **सैय्यद मस्जिद।**
- **जौनपुर:** इसे **शर्की शासकों का संरक्षण प्राप्त था।** इसने मीनारों के उपयोग से बचने का प्रयास किया। **उदाहरण**- जौनपुर की **अटाला मस्जिद** और **लाल दरवाजा मस्जिद।**
- **मालवा:** इसमें **पर्यावरणीय अनुकूलन शामिल है** जैसा कि बड़ी खिड़कियों, मेहराबों, कृत्रिम जलाशयों (बावली) आदि में देखा जा सकता है। एक प्रमुख विशेषता विभिन्न **रंग के पत्थरों** और **संगमरमर का उपयोग था।**
- उदाहरण- **हिंडोला महल, रानी रूपमती मंडप, जहाज महल, अशरफी महल** आदि।
- **दक्कन:** इसे **बीजापुर शैली के रूप में भी जाना जाता है।** इसे **आदिल शाह** के **संरक्षण में विकसित किया गया था। तीन धनुषाकार अग्रभाग, बल्बनुमा गुंबद** और **कॉर्निस का उपयोग** इस शैली के निर्माणों की विशेषताएँ हैं।

ONLYIAS BY PHYSICS WALLAH

अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम

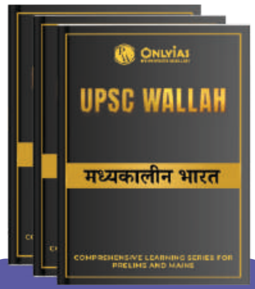

BOOKS

व्यापक कवरेज

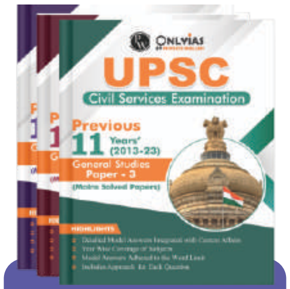

BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)

FREE MATERIAL

उड़ान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)

FREE MATERIAL

उड़ान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)

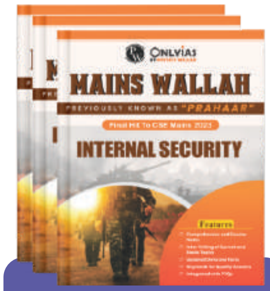

FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न

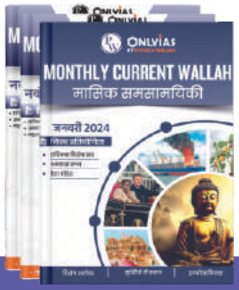

CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी

CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन

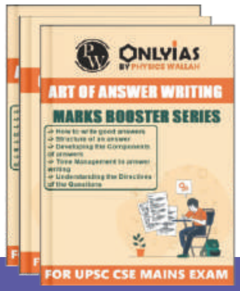

FREE MATERIAL

क्विक रिवीज़न बुकलेट

TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट

TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट

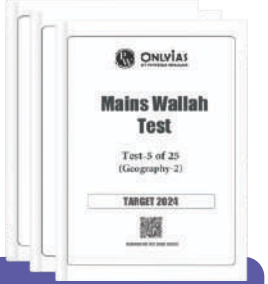

TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट

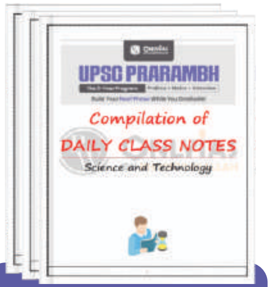

CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

All Content Available in Hindi and English

₹ 269/-

Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna

ISBN 978-93-6897-491-8

fea3d877-822e-4ec6-9b60-0cbd71890148